अमृत प्रार्थना - सद्गुरु से

पूज्य गुरुदेव द्वारा कराई गपूज्य गुरुदेव द्वारा कराई गई प्रार्थना प्रार्थना करेंगे कि....

हे गुरुदेव! आप पतितपावन हैं और मैं पतित हूँ। शरीर, इंद्रियाँ, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार यह संसार की ओर जा रहे हैं। ये सब बहिर्मुख हैं, नीचे की ओर जा रहे हैं । और मैं अपने से अपना उद्धार नहीं कर सकता। आप पतित पावन हैं,ऐसा जानकर आपकी शरण में आया हूँ।

क्योंकि संसार में एक आपके सिवा और कोई उद्धार नहीं कर सकता। माँ शरीर को जन्म दे सकती है, पिता पालन पोषण कर सकते हैं,भाई- बहन,दादा-दादी प्रेम दे सकते हैं, लेकिन उद्धार कोई नहीं कर सकता। यहाँ तक कि देवी देवता भी हमारी मनोकामना पूर्ण कर सकते हैं,अपना लोक दे सकते हैं, पद-प्रतिष्ठा दे सकते हैं, लेकिन मुक्ति तो, परम गति तो 'सद्गुरु' ही देते हैं।

इसलिए कहा है -मोक्ष मूलं गुरो: कृपा!

मैं अधूरा हूँ , आप पूर्ण हैं!

संसार में एकमात्र आप ही हैं जो परिपूर्ण हैं। अन्यथा सभी अधूरे हैं। जैसे समुद्र परिपूर्ण है, इसलिए सारी की सारी नदियाँ समुद्र की ओर ही दौड़ती है और उसमें विलीन हो जाकर के परिपूर्ण हो जाती हैं, वैसे ही सारे के सारे जीव अपूर्ण हैं,विषयी हैं, पतित हैं, अधूरे हैं। वे सब आपकी ओर ही ,जब आप की शरण में आते हैं और जब आपकी कृपा होती है तभी वे परिपूर्ण होते हैं,तभी वे पावन होते हैं।

इसलिए आपको परिपूर्ण ब्रह्म कहा जाता है। इसलिए इस पर्व को गुरुपूर्णिमा पर्व कहा जाता है क्योंकि सद्गुरु ही एकमात्र परिपूर्ण हैं।

तो... मैं अधूरा, मैं पतित हूँ, ऐसा जानकर आपकी शरण में आया हूँ।

आप मेरी शरणागति को स्वीकार करें!स्वीकार करें! स्वीकार करें!